सं श्रो वि अम्बाला/104-86/4973 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि हरियाणा पी. डब्ल्यू. डी. पब्लिक हैल्य मार्फत सुप्रीटैंन्डिंग इन्जिनियर, पब्लिक हैल्य डिविजन पी. डब्ल्यू डी. कालोनी, अम्बाला छावनी, के श्रमिक श्री रामस्वरूप, पुत्र श्री नराता राम मार्फत श्री सुरेन्द्र शर्मा इन्टक आफिस बाबना रोड, ब्राह्मण धर्मशाला, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, प्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रामस्वरूप की सेवाग्रों का समापन/छांटी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? .

सं श्रो विश्व प्रम्बाला/110-86/4979.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि प्रबन्धक निर्देशक, हरियाणा स्टेट फेंडरेशन ग्राफ कन्जुमरस कोश श्रोप होलसेल स्टोर्स लिश् एस. सी. ग्रो. नंश्व 1014-15, सैक्टर 22-वी चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री विमल कुमार जैन, पुत्र श्री मुकन्दी लाल, मकान नं. 5694, कबाड़ी बाजारी, ग्रम्बाला कैन्ट तथा उसके प्रवन्धकों के भध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इस लिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 3 (44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते है जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री <mark>बिमल कुमार जैन की सेवा समाप्ति/छंटनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत</mark> का हकदार है **?**

सं० म्रो॰ वि॰/एफ.डी./8/87/5006 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ लक्ष्मी टेलर मेन बाजार, पलवल (फरीदावाद) के समिक श्री धर्मचन्द मार्फत श्री भ्रार. एल. शर्मा प्रेजीडेन्ट जी. ई. डब्ल्यू यूनियन (रजि॰) कि/16, एन. म्राई. टी. फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई मौद्योगिक विवाद है ;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, अब, भोछोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिव्यों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978. के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11485-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उसके सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्गय एवं पंचाट तोन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है ।

क्या श्री धर्मवन्द की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह कित राहत का हकदार है ? सं० थ्रो. वि/एफ.डी./8-87/5013.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० लक्षमी टेलर, मेन बाजार, पलवल (फरीदाबाद) के श्रमिक श्री भगवान दास मार्फत श्री थ्रार. एल. शर्मा, प्रजीडेन्ट, जी. ई. डब्ल्यू यूनियन (रिज.), 1के/16, एन. आई. टी., फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्रीभगवान दास की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है?

सं श्रो. वि./एफ.डी./8-87/5020.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं विकास टेलर, मेन बाजार, पलवल (फरीदाबाद) के श्रमिक श्री हरिचन्द मार्फत श्री ग्रार. एल. शर्मा, प्रेजीडेन्ट, जी ई. डब्ल्यू यूनियन (रजि.) कि/16, एन. ग्राई टी., फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणाः के राज्यप्रातः विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछ्नीयः समझते हैं ;

इसलिए, अब, भौदोषिक बिवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415—3-श्रम 68/ 15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी—श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त प्रधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचें लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री हरि चन्द ृकी सेवाओं का समापन न्यायायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

सं बो विव/एफ डी विव/5027.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं विक्समी टेलर, मेन बाजार, पलवल (फरीदाबाद) के श्रमिक श्री नन्द किशीर मार्फत श्री ब्रार. एल शर्मा, प्रेजीडन्ट, जी. ई. डब्ल्यू (रिजि.) कि/16, एन. ब्राई टी., फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हुरियण्या के राज्यपाल विचाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रम, ग्रोधोगिक विवाद: ग्रियिनियम, 1947, की घार। 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिल्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाका के राज्यपाल इसके द्वारा उरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की धारा 7 के ग्रियीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नी ने लिखा मामला न्यायिन ग्रंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भाषवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या भी नन्द किंशोर की सेवामों का समापत स्वायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं॰ मो॰ बि॰/एफ॰ ही॰/5034.—चूंकि हरिवाणा के राज्यपाल की राव है कि मैं॰ लक्षमी टेलर, मैंन बाजार, पलवल । (करीवाबाद), के श्रेंनिके श्री तेज सिंह, मार्फत श्री श्रार. एल. शर्मा, प्रेजीडेन्ट, जी. ई. डब्ल्यू यूनियन (रजि.), 1कें/16, एन. मोई. टी., केरीबाबाद संग्रा उसके श्रवंकाकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई मीखोगिक बिबाद है ;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्वायनिर्णय हें तु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीक्षोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रश्नोग करते हुयें हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी धिध्युचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के स्माध पढ़ते हुए ग्रिधियूचना खं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधियूचना की धारा 7 के श्रीकी गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे युसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिष्य प्रश्ने पंचाट कीन मास में देने हेंतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवादग्रस्त मामला है :--

क्या श्री तेज सिंह की **देवाधों** का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो. बि./एफ.डी./8-87/5041.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं व लक्ष्मी टेलर मैंन बाजार पलवल, (शरीमाबाद) के श्रमिक श्री चन्द्र पाल मार्फत श्री भारवएलव शर्मा प्रेजीडेन्ट, जीव्हवड्टब्स्यू यूनियन, कि/16 एनवमाईव्टींव फरीबाबद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसिए, प्रय, भोकोणिक विवाद अधिनियम, 1947 की छारा 10 की जपधारा (1) के जब्द (ग) द्वारा प्रदान की 'गई के किया करते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5416-3-अम-68/15254, विनाच '20 जून, 1978' के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम 57/11245, दिनाक 7 फरवरी, 1958 द्वारा जकत अधिसूचनों की छारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित गीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री चन्द्र पाल की सेवा का समापन न्यायोजित तया ठीन है ? यदि नहीं, तो वह कित राहत का हकदार है ?

सं भो वि /एफ डी | 13-87 | 5048 -- चूंकि हरियाणा के राज्यनाल की राय है कि मैं जे उएम डी इण्डस्ट्रीज 5-डी | 9, सैक्टर 4, बल्लबगढ़ के श्रमिक श्री विजयपाल सिंह मार्फत हिन्द मजदूर समा, 29, शहीद चौर्म, फरीदबाद तथा उसके प्रकंश के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौडोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विजाद की त्यायति गंग हेतु तिर्दिष्ट करता वांछतीय समजते हैं ;

इसलिए, अब, मौद्योगिक विवाद मिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई सक्तियों का प्रयोग करतें हुये हरिवाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी अधिसूचना सं0 5415—3—अम 68/15254, विनांक 20 जूम, 1978 के साथ पढ़तें हुए मिधिसूचना सं0 11495—जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, हारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के मिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला क्यायानिगंव एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त कामें सा विवाद से सुसंगत प्रथम सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री विजयपाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, ती वह किस राहत का हकदार है ? सं क्रो वि०/एफ.डी./13-87/5055.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ० जे ०एम ० डी इण्डस्ट्रीज, 5-डी ०/९, सै कटर 4, बरलबगड़, के श्रीम म श्रा धर्मपाल मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौक नीलम, फरीदाबाद तथा उसकें प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है :

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्टसूचना सं० 5415-3 अस 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिष्टसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्टसूचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री धर्मशल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

सं शो वि वि (एफ वि) (13-87/5062 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व जै एम वि वि इण्डट्रीज 5-डी/9, सैक्टर-4, फरीदाबाद के श्रमिक श्री ललन कूमार मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौक नीलम, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के संबन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीचोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई मिनतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-%म 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-र्ज:-श्रम 57/11245, दिनांक 7 परवर्रा, 1968 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, परीदाबाद का दिवादग्रस्त या उससे सुस्यत या उसके सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:--

नया श्री ललन कुमार की सेवाग्रों का समापन न्याायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत, रे का हकदार है ।

सं• श्री० वि०/एफ०डी०/13-87/5059 →-बूकि हरियामा के राज्यात हो राज है कि मैं० जो एमं० ही० इण्डस्ट्रीज 5-डी/9, सैक्टर 4 बल्लबगढ़ के श्रमिक श्री सुदर्शन मार्फत हिन्द मजदूर समा, 29, शहोद चौक नीलम, फरीदाबाद तया उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीक्रीयिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, प्रव, मौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिल्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415—(3)—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी—श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तोन मात में देने हेतु निर्विष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :——

क्या की सुदर्शन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० भ्रो० वि०/एफ०डी०/13-87/5076.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० जे० एम० डी० इण्डस्ट्रीज 5-डो/9, सैक्टर-4, बल्लबगढ़ के श्रमिक श्री वासुदेव मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौक नीलम, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यनाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जूम, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की द्वारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री वासुदेव की सेवाओं का समापन न्यायोगित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

संव ग्रोव विव/एफव्डीव/13-87/5083.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैव जेव एमव् डीव इण्डस्ट्रीज 5-डी/9, सैक्टर्-4, बल्लबगढ़ के श्रमिक श्री राधेश्याम मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौक नीलम, फरीदाबांद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 प. रवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राधेश्याम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 4 फरवरी, 1987

सं० भो० वि०/कुरु०/6-8.7/5208.—चं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि उपायुक्त, कुरुक्षेत्र (2) प्रशासक, नगरपालिका, कैयल के श्रमिक श्री भीम प्रकाण, पुत्र श्री मामराज मकान नं० 290/6, योगियन मुहल्ला माता गेट कैयल तथा उसके प्रकेटकों के मध्य इसमें इसमें बाद लिखित मामने में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, मब, मौद्योगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्सियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 3 (44)84—3—श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त भ्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्वाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला स्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री श्रीम प्रकाश की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

ग्रार० एस० ग्रग्रवाल, उप सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।